पत्रांक .... दिनांक ....

B.A. Part I Hons. Paper I — HISTORY
History of India — Beginning to 1906.

Prof. POONAM CHOUDHURY.
Chief Coordinator History
Nalanda Open University.

Ques.) Describe the Religion and Town Planning of Indus Valley Civilization.
सिन्धु घाटी सभ्यता के धर्म एवम् नगर योजना का वर्णन कीजिए।

Ans. A धार्मिक स्थिति — सिन्धु घाटी में ऐसी कोई इमारत नहीं निकली है जिसे देव मंदिर कहा जा सके। यहाँ के निवासी के धार्मिक विचारों का अनुमान हमें कुछ मूर्तियों मुहरों और मुद्राओं पर बनी आकृतियों से करना पड़ता है। सैन्धव सभ्यता के अवशेषों में अनेक स्त्री मूर्तियाँ मिली हैं, जिसके एक चित्र में स्त्री के पेट में एक पौधा निकला हुआ दिखाई देता है। इससे यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि यह पृथ्वी देवी रही होगी जिसका संबंध पौधों की उत्पत्ति और विकास में था। भारत में पृथ्वी की पूजा बहुत दिनों से होती रही है। अतः संभव है कि यह इसी समय शुरु हुई हो। आज भारत के हिन्दू दुर्गा, काली, अम्बा, चण्डी, आदि की पूजा करते हैं। सैन्धव सभ्यता में पशुपति शिव की भी पूजा होती थी जिसकी सभ्यता अवशेषों पर एक नग्न पुरुष देवता — जिनके तीन मुख हैं और दो सींग हैं और यह पालथी मारकर ध्यान-मग्न बैठा हुआ है — के चित्र को देखने से भली-भाँति परिलक्षित होता है। उस नग्न पुरुष देवता के चारों ओर चार पशु, हाथी, बाघ, भैंस और गैंडा तथा आसन के नीचे दो हिरण भी हैं। पशुपति शिव की मूर्ति के उपर्युक्त चित्रण की सत्यता को आधार मानकर बहुत-से विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि "शैव-धर्म" संसार का प्राचीन धर्म है।

Scanned with CamScanner

पत्रांक .....

सैन्धव सभ्यताकाल में 'शिवलिंग - पूजा' की प्रथा भी प्रचलित थी, जिसके प्रमाण में पत्थर के बहुत - से लिंग मिले हैं। आज भी हमारे देश भारत तथा नेपाल में शिव लिंग की पूजा प्रचलित है।

इतना ही नहीं, सैन्धव - सभ्यता के लोग वृक्ष की भी पूजा करते थे, जिसमें 'पीपल के वृक्ष' की प्रधानता थी। यद्यपि पीपल के अतिरिक्त नीम - वृक्ष भी पूजा हेतु पवित्र समझे जाते थे, फिर भी कैसा विश्वास अब भी हमारे देश में किया जाता है कि पीपल के वृक्ष पर ब्रह्मा रहते हैं। इस सभ्यता में पशु - पूजा भी प्रचलित थी। पशुओं में गाय की अपेक्षा साँढ़ की पूजा अधिक होती थी। नाग देवता की भी पूजा होती थी जो आज भी प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त वायु, अग्नि, सूर्य एवं चन्द्रमा की भी पूजा प्रचलित थी। जल को भी पवित्रता की दृष्टि से देखा जाता था, और नदियों की आराधना भी की जाती थी। उदाहरणस्वरूप, आज भी हमारे यहाँ गंगा मैया आदि की पूजा बड़े धूम - धाम से होती है।

सैन्धव - सभ्यता के लोगों में भूत-प्रेत की धारणा भी प्रचलित थी, जिनसे बचने के लिए ताबीजों का प्रयोग किया जाता था। आज भी भूत - प्रेत में लोगों का विश्वास है और भूत - प्रेत से बचने के लिए लोग ताबीज का प्रयोग करते हैं।

मुख्यतः सैन्धव - सभ्यता के लिंग लोग मातृ - पूजा के अलावा प्रजनन - शक्ति की उपासना भी करते थे। कालान्तर में हिन्दू - धर्म में भी योनि तथा लिंग की पूजा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया, जो आज भी व्यवहारतः प्रचलित है।

संक्षेप में, उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट है कि हिन्दू - धर्म की अनेक विशेषताएँ सैन्धव - सभ्यता की निरन्तरता

के धर्म में बीज रूप में मौजूद थी। अतः Sir John Marshall का कथन है कि, "उनका धर्म इतनी विशेषता के साथ भारतीय है कि आजकल के प्रचलित हिन्दू-धर्म से उसका विभेद कठिनता से किया जा सकता है - बिलकुल अल्प प्रतीत होता है।"

ब) नगर निगम और भवन निर्माण कला :- सैन्धव सभ्यता की नगर-निर्माण और भवन-निर्माण योजना बहुत ही उच्च कोटि की थी।

i) नगर निर्माण - सिन्धु-घाटी की खुदाई में प्राप्त अवशेषों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ के नगर बड़े ही आकर्षक थे। नगर में बड़ी-बड़ी सड़कें थीं जो बहुत चौड़ी थीं। नगर के प्रमुख सड़कों की चौड़ाई 33 फुट तक पायी है, जिससे स्पष्ट होता है कि इन सड़कों पर अनेक गाड़ियाँ आ जा सकती थीं। सड़कों को मिलानेवाली गलियों की चौड़ाई भी पर्याप्त रूप से विस्तृत होती थी। कम से कम चौड़ी गली लगभग 4 (चार) फुट की होती थी।

ii) नालियों का प्रबंध - सिन्धु घाटी के शहरों में मैले जल बाहर ले जाने के लिए नालियों की समुचित व्यवस्था है। स्नानागारों, पाकशालाओं तथा शौचालयों का जल इन्हीं नालियों द्वारा बाहर जाता था और आज भी जाता है। ये नालियाँ आज की भाँति बाहर की बड़ी नालियों से मिल जाती थीं। ये सारी नालियाँ पक्की ईंटों की बनी होती थीं, जिन्हें ईंटों से ढँक दिया जाता था। ये नालियाँ ~~पत्थर के टुकड़ों से~~ 9 इंच चौड़ी और 12 इंच गहरी होती थीं। कम चौड़ी नालियाँ ईंटों से तथा अधिक चौड़ी नालियाँ पत्थर के टुकड़ों से ढँकी जाती थीं। ऊपर की मलिन का गंदा पानी नीचे जाने के लिये मिट्टी के पाइप का।

Scanned with CamScanner

Page 4

प्रयोग किया जाता था जिनकी जगह आजकल कोई के पाइप प्रयोग आते हैं। महान इतिहासकार Gordon Child ने इस व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि -"गलियों की सुन्दर पंक्तियां और नालियों का उत्तम प्रबंध और उनकी सतत स्वच्छता इस बात का संकेत देती है कि यहाँ कोई नियमित नगर शासन था जो अपना काम सावधानी से करता था।

3. जलाशय या स्नानागार – मोहनजोदड़ो की खुदाई में एक विशाल स्नानागार या जलाशय भी मिला है। इस जलाशय की लंबाई 37 फीट चौड़ाई 23 फीट और गहराई 8 फीट है। इस जलाशय के निकट एक कुआँ भी बना हुआ मिलता है जो शायद जलाशय को पानी भरने के लिए बनाया गया था। जलाशय पक्की ईंटों से बना हुआ है। इसी जलाशय के आस-पास 8 स्नानागार बने हुए हैं। जलाशय के निकट ही एक विशाल भवन था जिसको हम्माम कहा गया है। इसमें जल को गर्म किया जाता था। स्नानागार के गन्दे जल को निकालने के लिए नालियों की व्यवस्था थी।

4. भवन – निर्माण – सैन्धव-सभ्यता के निर्माताओं को भवन-निर्माण कला का पूर्ण ज्ञान था। इस दिशा में वे काफी प्रगतिशील थे। उनके निवास के मकान बहुत अच्छे ढंग से बने होते थे, जिसमें सब प्रकार के आराम की समुचित व्यवस्था रहती थी। मकान प्रायः दो दो और तीन-तीन मंजिल के होते थे। छतों पर जाने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था रहती थी, जो आज भी प्रचलित हैं। मकान पक्की ईंटों के बने रहते थे और घर का फर्श भी पक्की ईंटों का बना होता था। मकान की समस्त नालियों का गंदा पानी नगर की नालियों में जाकर गिरता था। मकानों के मुख सड़कों की ओर होते थे। प्रत्येक मकान में दरवाजा और खिड़कियां रहती थीं। इस तरह स्पष्ट होता है कि सिन्धु

Scanned with CamScanner

घाटी सभ्यता में भवन निर्माण में आराम, वायु, प्रकाश तथा स्वच्छता का विशेष ध्यान, आज की भाँति रखा जाता था। प्रायः मकान के निम्न भाग में नौकर-चाकर रहते थे, और ऊपर के भाग में गृहस्वामी। मकान की तरह आँगन में आलमारियाँ, खूटियाँ आदि सब कुछ होती थीं। मकान और आँगन में एक तरफ रसोईघर होता था, जिसमें चूल्हे की व्यवस्था की गई थी।

5. कुओं का प्रबंध — आसानी से जल प्राप्त करने हेतु सैन्धव सभ्यता के लोगों ने कुओं का प्रबंध भी किया था। खुदाई में कुछ सार्वजनिक कुओं मिले हैं जिनकी चौड़ाई (2 फीट से सात फीट) है। सार्वजनिक कुओं के अलावा आज की भाँति लोग अपने घरों में व्यक्तिगत प्रयोग के लिए कुएँ बनवाते थे।

6. स्वास्थ्य और सफाई — स्वास्थ्य और सफाई के लिए खुले मकान और नालियों के प्रबंध के साथ ही साथ गंदगी को फैलने से रोकने के लिए शहर के भीतर स्थान स्थान पर गंदी चीजों को फेकने के लिए प्रबंध किया जाता था, जो व्यवहारतः आज भी प्रचलित है।

7. मजदूरों का महल्ला — मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में कुछ ऐसी बस्तियाँ और मकान मिले हैं, जिन्हें "मजदूरों का महल्ला" कहा जाता है। चूंकि एक ही नगर में एक ही तरह के बहुत मकान हैं। इसी से यह अनुमान किया जाता है कि संभवतः इसका निर्माण मजदूरों के लिए हुआ है। इसके संबंध में हिल्लर की उक्ति उल्लेखनीय है कि, "वह फौजी छावनी के समान संगठित है और इससे सत्ता का बोध होता है।" इन इलाकों में प्रायः ऐसे मजदूर रहते थे जो गुलामों के रूप में थे।

8. सार्वजनिक भवन — मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में सार्वजनिक भवनों का निर्माण होता था जो सम्भवतः सार्वजनिक उपयोग के लिए बने थे। मोहनजोदड़ो में सार्वजनिक कार्य हेतु निर्मित एक भवन मिला जिसकी लम्बाई 230 फीट, चौड़ाई 78 फीट और उसकी दीवार 5 फीट है। संभवतः ये सार्वजनिक भवन लोगों के धार्मिक और राजनीतिक जीवन के केन्द्र रहे हों। वस्तुतः यह एक सार्वजनिक सभा भवन है, जिसमें

Scanned with CamScanner

Page 6

विशेष अवसर पर बैठकर सभा होती थी। इसमें उत्सवों और मेलों के अवसर पर लोग एकत्रित होते थे।

1. बाजार — सैन्धव सभ्यताकाल में प्रत्येक नगर में एक बाजार भी होता था, जो नगर निवासियों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। मोहनजोदाड़ो तथा हड़प्पा में सड़कों के पास कुछ ऐसे मकान मिले हैं जो मूलतः दुकान के काम आते होंगे जिसके साथ गोदाम भी थे।

मोहनजोदाड़ो एक वर्गमील के घेरे में बसा हुआ था। दोनों नगरों — हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो के चारों तरफ उसके रक्षार्थ दीवार बनी हुई थी, जिससे इस नगर का रूप किले का-सा था। फलस्वरूप इन नगरों में सहस्त्रों नर-नारी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे।

उपर्युक्त विवेचना से निष्कर्षस्वरूप यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि सैन्धव-सभ्यता में नगर-निर्माण कला की उन्नति चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। नगरों का निर्माण इस प्रकार हुआ था कि इसमें नागरिक सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें। नगर योजना एवं बनी तथा सार्वजनिक भवनों की बनावट से यह स्पष्ट हो जाता है कि भवन-निर्माण कला काफी उन्नति कर चुकी थी।

—X—